सऊदी
भारत और अरब जीवन्त द्विपक्षीय व्यापारिक सम्बन्धों को साझा करते हैं। जिसमें सन् 2000 के मध्य से निरन्तर प्रगाढ़ता आई है। भारत एक विशाल बाजार और व्यापक रूप से आयात उन्मुख देश है। आर्थिक तथा निवेश समझौतों पर हस्ताक्षर से सऊदी अरब को भारत में अपने आर्थिक कार्यक्रमों के विस्तार में सहायता मिली है।

ऐसे तो भारत और अरब देशों का सम्बन्ध बहुत पुराना है क्योंकि हम सभी जानते हैं अरब देशों में Petroliam पदार्थ की भरमार है। अरब की धरती के नीचे पेट्रोलियम तेल बहता है। वहां पेट्रोलियम का कुआँ है। ऐसे में भारत अरब से पेट्रोलियम पदार्थों का आयात करता है।

कूटनीतिक रिश्तों की स्थापना 1947 में ही हो गई थी और तब से दोनों देशों की यात्राओं पर जाते रहे हैं। इन यात्राओं की शुरुआत 1955 में किंग सऊद बिन अब्दुल अजीज अल सऊद की 17 दिनों की भारत यात्रा से शुरू हुई थी।

दोनों देश समान विचार साझा करते हैं। आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए। अरब में कोई भी गरीब नहीं है।

पेट्रोलियम को कच्चा सोना भी कहा जाता है। सऊदी अरब का चौथा सबसे बड़ा व्यापार भागीदार (अमेरिका, चीन और जापान के बाद)

भारतीय दूतावास,

प्राचीन भारत और अरब के बीच व्यापार और सांस्कृतिक तीसरी century ई॰ पू॰ से 1000 ई॰ पूर्व तक. दक्षिण भारत और अरब economy की रीढ़ बन गए। अरब व्यापारियों ने यूरोपीय साम्राज्यवादी साम्राज्यों के उदय तक भारत और यूरोप के बीच गरम मसाला पर एकाधिकार रहा है।

प्रभाव — भोजन, वस्त्र, भाषा और वास्तु-कला और जीवन के सभी क्षेत्रों में

हज-यात्रा एक महत्वपूर्ण घटक है cultural

भारत-अरब सम्बन्धों पर विदेशों में सेमिनार भी आयोजित होते हैं। और भारत के विदेश राज्य मंत्री शशि थरूर के द्वारा उद्घाटन करवाया गया।